आधुनिक भारत

- औरगजेब की मृत्यु के बाद आने वाले 52 वर्षो में 8 मगुल सम्राट गद्दी पर बैठे । 1707 ई. में औरगजेब की मृत्यु के बाद उसके तीन पुत्रो मेंयुद्ध शुरू हो गया । 1707 ई. में जाजु ने लडाई में मुअज्जम ने आजम को परास्त किया तथा हैदराबाद के पास 1708 में कामबख्श को पराजित किया फिर बहादुरशाह प्रथम के नाम से नया मगुल बादशाह बना ।

बहादुरशाह प्रथम

- 65 वर्ष की उम्र में शासक बना । इसे शाह-ए-बेखबर कहा जाता है इसने हिन्दुओ के साथ मेंल मिलाप की नीति अपनाई । इसने मराठा शासक साहु एवं उनकी माता यशुबाई को कैद से स्वतंत्र कर दिया गया । इसका शासन काल 1707-17 12 ई. रहा ।

जहाँदार शाह

- ईरानी दल के नेता जुलफीकार खाँ की सहायता से 1712 में बहादुरशाह की मृत्यु के बाद शासक बना । इसने जजिया को हटा दिया । अजीत सिंह एवं जय सिंह का मनसब 7000 तक किया । जय सिंह को मिर्जा राजा सवाई तथा महाराजा की उपाधियाँ दी जहाँदार शाह को लम्पट मूर्ख कहा जाता है

फर्रूखसियर

- हिन्दुस्तानी दल के नेता सैयद बुंध के सहायता से जनवरी 1713 ई. में फर्रूखसियर शासक बना । सैयद बुंधओ मेंसे अब्दुल्ला खाँ को वजीर और हुसैन अली को मीरवख्शी बनाया गया । सैयद बधु को King maker अर्थात राजा बनाने वांला कहा जाता है इसने जजिया कर और तीर्थ कर हटा दिया । इसका शासन काल 1713-19 ई. तक रहा ।

मुहम्मद शाह

- कुछ छोटे-2 शासकों को सतासीन होने के बाद मुहम्मद शाह शासक बना । इसे पुराने दल के नेता निजाम-उल-मुल्क की सहायता प्राप्त थी । मुहम्मद शाह एक विलासी प्रवृति का शासक था इसके शासन काल में ईरान के नेपोलियन नादिशाह ने 1738-39 ई. में आक्रमण किया । करनाल के युद्धमें मगुल सेना पराजित हुआ इसी समय नादिर शाह ने भारत से 70 करोड का माल लूटा था
- अहमदाबाद अब्दाली का आक्रमण अहमदबाद के काल में हुआ था सहादत खाँ को 1722 ई. में अवध का सूवेदार बनाया गया था मुहम्मद शाह के समय में हैदराबाद,अवध,बंगाल स्वतंत्र हो गया । निजाम -उल-मुल्क ने 1724 ई. में सकुराखेड़ा के युद्धमें हैदराबाद के सूबेदार मुवारिज खाँ को अपदस्त कर अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी । इसका शासन काल 1719-1748 रहा

अहमद शाह

- इसका शासन काल 1748-54 तक रहा । इसका पूरा शासनकाल षड्यंत्रो का काल रहा । मगुल साम्राज्य सिमटकर छोटा हो गया

आलमगीर द्वितीय -शाहजहाँ ।।।(1758 से 1759)

- आलमगीर द्वितीय का शासन काल 1758-59 ई. रहा । इस समय सता की वास्तविक शकितयाँ बजीर गाजीउद्दीन के

हाथो में केन्द्रित रही । यदुनाथ सरकार का मानना था कि इसके समय शाही चूल्हे में कई शाम आग नही जलती थी ।

शाह आलम द्वितीय

- इसका शासन काल 1759-1806 ई. तक रहा । इसके समय में 1761 ई में पानीपत के तृतीय युद्धमें अहमद शाह अब्दाली ने मराठों को पराजित किया ।
- यह 1764 ई. के बक्सर के युद्धमेंबंगाल के नवाब मीर कासिम ,अवध के नवांब शुजाउद्दौला का साथ दिया था
- इसी के शासन काल मेंअंग्रेजो ने 1803 ई. में दिल्ली पर कब्जा कर लिया ।
- शाह आलम द्वितीय को बिना राजमुकुट का बादशाह कहा जाता है ।

अकबर द्वितीय

- इसका शासनकाल 1806 से 1837 ई. तक रहा बादशाह का अधिकार लाल किला के अदंर ही सिमट कर रह गया |
- बहादुर शाह द्वितीय
- इसका शासन काल 1837 ई. तक रहा | 1857 के विद्रोह में भाग लेने के कारण इसे निर्वासित कर रंगून भेज दिया गया ।1862 में इसकी मृत्यु हो गयी |

नये स्वतंत्र राज्य

हैदराबाद

- चिनकिलिच खाँ या निजाम-उल-मुल्क ने 1724 ई. में सकुराखेडा के युद्धमें हैदराबाद के गवर्नर मुवांरिज खाँ को परास्त कर अपनी स्वतत्रता की घोषणा की |

अवध

- असादत खाँ बुरहान-उल-मुल्क ने अवध में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की । सआदत खाँ को 1772 ई. में अवध का सूबेदार बनाया गया था । 1739 ई. में इसकी मृत्यु के बाद सपदरजंग अवध का नवाब बना ।
- अवध के नवांबो में आसफउद्दीला मुख्य था जिसने राजधानी फैजाबाद से लखनऊ परिवर्तित किया । 1856 में अग्रेजी साम्राज्य में मिला गया

बंगाल

- मुर्शिदकुली खाँ को बंगाल के स्वतंत्रसूबे का संस्थापक माना जाता है यह राजधानी ढाका से मुर्शिदकुली ले आया | 1727 ई. में इसकी मृत्यु के बाद इसका दामाद शुजाउद्दीन इसका उतराधिकारी बना । 1733 में मगुल बादशाह ने शुजाउद्दीन को बिहार की भी सूबेदारी प्रदान की ।
- 1739 ई. में सरफराज खाँ शासक बना लेकिन अलीबर्दी खाँ ने एक वर्ष के भीतर इसे सता से हटाकर स्वयं बन बैठा ।अलीवर्दी खाँ अग्रजो के विषय में कहा जाता है कि अग्रेज ऐसे मधुमक्खी है जिन्हे सहलाने से शहद देगे जबकि छेडने से काट लेंगे ।
- 1756 में अलीवर्दी खाँ की मृत्यु के बाद सिराजुद्दौला शासक बना इस समय में ढाका के गवर्नर की पत्नी धसीटी बेगम पूर्णिया के गवर्नर का पुत्र शौकत जंग था |
- 1756में नवाब ने कलकत्ता अभियान किया| इस युद्ध के बाद ही " Black hole " घटना हुई जिसमें146बंदी को एक तंग कोठरी में बंद कर दिय गया | जिसमें से सुबह 123 की मृत्यु हो गयी |

- 23 जुन 1757 को अंग्रेज़ी और नवाब के बीच प्लासी के मैदान में युद्ध हुआ | लेकिन प्रधान सेनपति मीरजाफर के धोखे के कारण सिराजुद्दौला पराजित हुआ | नवाब मुरशिदबाद लौट आया | जहाँ मीरजाफर के पुत्र मीरन ने उसकी हत्या कर दी |
- मीरजाफर नवाब बना बदले में अंग्रेजो को धन एवं24 परगना की जमींदारी दी |
- 1760 ई. में अंग्रेजो ने मीरजाफर को हटाकर मीरकासिम को नवाब बनाया | इसके लिये मीरकासिम ने अंग्रेजो को धन तथा बध्दवान, मिदनापुर तथा चटगाँव की जमींदारी प्रधान की | मीरकासिम ने राजधानी मुरशिदबाद से मुंगेर ले आया |
- 22 अक्टूबर 1764 को बक्सर के मैदान में अंग्रेज़ी सेना जिसकी कमान कैप्टन मुनरो के हाथ में और एक तरफ़ बंगाल के नवाब मीरकासिम, अवध का नवाब शुजा उधोला एवं मुगल बादशाह शाह आलम दवितिय के साथ हुआ | ब्रिटिश सेना विजयी रही | मीरजाफर को नवाब बनाया गया|
- बक्सर के युद्ध के बाद क्लाईव गवर्नर बनकर आया | इसने 1765 में मुग़ल बादशाह आलम द्वितीय के साथ इलाहाबाद की संधि की जिसके तहत अंग्रेजो को बिहार, बंगाल , उड़ीसा की दीवांनी मिला | मुगल बादशाह को 26 लाख पेंशन एवं53 लाख निजामत के खर्च के लिए मिला | अब बंगाल में द्वैधशासन प्रणाली की शुरुआत हुई |

राजपूत राज्य

- 18वीं सदी में मुगलों की कमजोरी का लाभ उठाकर अनेक राजपूत राज्य स्वतंत्र हुआ | इनमें सर्वाधिक योग्य सवाई राजा जय सिंह थे | जय सिंह ने जयपुर नगर की स्थापना वैज्ञानिक तरीके से किया | इसने दिल्ली, उज्जैन, वांरणसी और मथुरा में वेध शालाये बनाई |

जाट राज्य

- दिल्ली, मथुरा, आगरा के कुछ क्षेत्रों को जीतकर चुरामन और बदन सिंह नामक जाट नेता ने स्वतंत्र जाट राज्य की स्थापना की | भरतपुर की जाट शक्ति सूरजमल के समय चरमोत्कर्ष पर था |

मैसूर

- 1761 ई. में हैदर अली ने वाडियर वंश के शासक चिक्का कृष्ण राज के ऊपर नियंत्रण स्थापित कर लिया | फ्रांसिसियो की सहायता से हैदर अली ने "डिंडीगुल 1755 ई."में आधुनिक शस्त्रानगर का निर्माण करवांया |

प्रथम आग्ल मैसूर युद्ध

- यह युद्ध 1767 से 1769 ई. तक चला | इस युद्ध में हैदर अली का पलड़ा भारी रहा | 1769 ई. की मद्रास की संधि द्वारा दोनों पक्षों में समझोता हुआ |

द्वितीय आग्ल मैसूर युद्ध

- 1780 – 84 ई. इस अंग्रेजी सेनपति सर आयर कूट ने हैदर अली को पराजित किया | 1782 ई. में हैदर अली की मृत्यु हो गयी | अब मैसूर का नेतृत्व टीपू सुल्तान के हाथ में आया | 1784 ई. में मंगलोंर की संधि द्वारा युद्ध समाप्त हुआ |

तृतीय आग्ल मैसूर युद्ध

- 1790-92 ई. के बीच हुआ | 1792 में श्रीरंगपट्टनम की संधि द्वारा समाप्त हुआ | इस संधि द्वारा टीपू को अपना आधा

राज्य, युद्ध हर्जाने के रूप में 3 करोड़ एवं दो पुत्रो को बंधक कर रूप में रखना पड़ेगा |

- इसने श्रीरंगपट्टनम में स्वतंत्र वृक्ष लगवांया | फ्रांस के जैकलिन क्लब का सदस्य बना |

चतुर्थ युद्ध 1799 ई. |

सिक्ख राज्य

- 18वीं सदी के उतराध्दमें बहुत छोटे-छोटे गुटों ने स्वंयम को 12 क्षेत्रीय संघों या मिसलो में स्थानीय सरदारों के नेतृत्व में संगठित किया | इस मिसलो में भंगी मिसल सबसे शक्तिशाली थे जिसका नियंत्रण झेलम एवं सिंध नदियों के बीच के क्षेत्र लाहौर और अमृतसर पर था |
- सुकर चकिया मिसल के सरदार रंजित सिंह के नेतृत्व में एक शक्तिशाली सिक्ख राज्य की स्थापना हुई |
- रंजीत सिंह ने 1799 ई. में लाहौर पर अधिकार कर लिया | फिर भागी मिसल से अमृतसर तथा उसके आस-पास के क्षेत्र पर अधिकार कर लिया | 1820 तक रंजीत सिंह को सम्पूर्ण पंजाब का शासक मान लिया गया |
- 1809 ई.अंग्रेजो ने रजित सिंह के साथ अमृतसर की सधिं की जिसके तहत महाराजा को सतलज के पार के क्षेत्र पर से अपने अधिकार के दावों को वांपस लेना था |
- 1845 ई. में पहला आग्ल सिकख युद्ध हुआ जिसके फलस्वरूप लौहार की संधि हुई जिससे सिकखो को काफी नुकसान उठाना पडा फिर 1846 को भैरोवांल की पूरक सिध द्वारा अमृतसर का सचालन ब्रिटिशरेजीडेन्ट के हाथो में चला गया |
- 1848 ई. मेंद्वितीय आग्ल खिक्ख युद्ध हुआ ब्रिटिशसेनापति नेपियर ने सिक्खों युद्ध को पराजित किया | सिक्ख राज्य को ब्रिटिशराज्य में मिला लिया गया | इस समय डलहौजी गवर्नर जनरल था |
- अंतिम सिक्ख महाराजा दिलीप सिंह को पेंशन देकर लंदन पढ़ाई के लिए भेज दिया गया |
- अफगान शासक शाहशुजा मेंरणजीत सिंह को कोहिनूर हीरा दिया था जो अंग्रेजो के हाथ में चला गया |

सिन्धु

- नेपियर के नेतृत्व में 1845 ई. में सिध को ब्रिटिश सामाज्यमें मिला लिया गया |

मराठा पेशवां

- बहादुरशाह द्वारा शाहु को रिहा के देने के बाद सता संघर्ष आरम्भ हुआ तारावांई एवं उसका सेनापति धन्ना प्रमुख केन्द्र बिन्दु थे | धन्ना की मृत्यु के बाद उसके पुत्र चन्द्रसेन को शाहु ने सेनापति बनाया | चन्द्रसेन का झुकाव तारावांई की तरफ था | अतः शाहु ने सेनाकर्ते का पद सृजित किया | सेना को सगठित कर बालाजी विश्वनाथ को इस पद पर नियुक्त किया |
- शाहु ने 1713 ई. में बालाजी विश्वनाथ का पेशवां के पद पर नियुक्त किया |
- दक्कन के चौथे एवं सरदेशमुखी को कुशल तरीके से कर वसूलने के लिए मराठा सरदारों को अलग-2 इलाका सौंपा जिससे मराठापरिसंधीय व्यवस्था का जन्म हुआ |

- होल्कर-इंदौर,गायकवांड-बड़ौदा,सिधिंया-ग्वालियर,भोसले-नागपुर,पवांर-मालवां
- 1720 ई. मेंबालाजी की मृत्यु के बाद बाजीराव प्रथम पेशवांबना | इसने हिन्दू पद पदशाही का नारा दिया | शिवजी के बाद गुरिल्ला युद्ध का सबसे बड़ा प्रतिपादक था |
- 1740 ई. में इसकी मृत्यु के बाद इसके पुत्र बालाजी बाजीराव को पेशवां नियुक्त किया इसके समय पेशव का पद वंशानुगत हो गया | 1749 ई. में शाहु की मृत्यु हो गयी | 1750 ई. में सगोला की संधिद्वारा पेशवांमेंछत्रपति की सभी कार्यपालक शक्तियाँ निहित कर दी गई | पेशवांका पीठ सतारा से पुना हस्तांतरित कर दिया गया |
- 1752 ई. में भलकी की संधि के द्वारा निजाम ने बरार का आधा भाग मराठा को दे दिया |
- नाना फडवनवींस के अधीन माधव नारायण राव को नय पेशवांबनाया गया | रघुनाथराव अंग्रेजो के शरण में चला गया |

प्रथम आग्ल मराठा युद्ध 1775-1782

- रघुनाथ के साथ अंग्रेजो ने सूरत की संधि 1775 ई. में किया तथा पेशवां माधवां नारायण ने 1776 ई. में पुरन्दर की संधि की | अग्रेज सूरत की संधि को मानना चाहते थे फलस्वरूपअंग्रेजो एवं मराठो के बीच तालगांव का युद्ध हुआ अंग्रेजो ने इस अपमान जनक संधि को स्वीकार नही किया तथा सर आयरकूट ने पोर्टोनोवांका युद्ध जीत लिया |
- 1782 ई. में सालबाई की संधिके द्वारा दोनों विजित क्षेत्र को वांपस कर दिए|

द्वितीय आग्ल मराठा युद्ध

- बेसीन की संधि
- लार्ड लेक ने सिंधियों को हराकर सुर्जी अर्जुन गांव की संधि की |
- भोसले को हराकर देवगांव की सहायक संधि की
- जॉन बारलो ने होल्कर के साथ राजपुर घाट की संधि की |

तृतीय मराठा युद्ध

- 1817-1818 इस युद्ध के फलस्वरूप पेशवां बाजीराव को पेशन सेक्र विठुर भेज दिया गया और मराठा सामाज्य पर अंग्रेजोका अप्रत्यक्ष अधिकार हो गया |

भारत मेंब्रिटिश फ्रासीसी व्यापारिक

- भारत मेंदोनों के बीच युद्ध आस्टिया के उतराधिकारी से प्रारम्भ होकर सप्त वर्षीय युद्ध के साथ समाप्त हुआ |

प्रथम कर्नाटक युद्ध

- भारत के फ्रांसिसी गवर्नर डुप्ले ने मुद्रास का घेरा डालकर मुद्रास के गवर्नर को आत्म सर्मपण कराया |कर्नाटक के नवांब अनवरूद्दीन के हस्तक्षेप करने पर 1748 ई. में युरोप में फ्रांस एवं बिटेन के बीच एलाशपिल की संधि हुई जिससे मद्रास को वांपस मिल गया | युद्ध समाप्त हो गया |

द्वितीयकर्नाटक युद्ध

- यह युद्ध 1749-54 तक चला | यह युद्ध कर्नाटक के उतराधि कार के लिए था |क्लाइव सूझबूझ के कारण अग्रेज सफल रहे |

कर्नाटकका तृतीय युद्ध

- यह 1758-63 तक रहा | 1760 ई. मेंअंग्रेजसेना ने आयर कूट के नेतृत्व मेंवांण्डीवाश की लड़ाई मेंफ्रांसिसीको बुरी तरह से पराजित किया |

भारत में यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों

पुर्तगालियों का आगमन

- 1498 ई. पुर्तगाली वास्कोडिगामा ने कालीकट पहुँचकरभारत के नये समुद्री मार्ग की खोज की | वास्कोडिगामा वापसी के समय में जो वस्तुएँ यहाँ से ले गया | वह उसे यूरोप में बेचकर अपनी यात्रा खर्च से 60 गुना अधिक कमाई की |
- धीरे-2 पुर्तगालियों ने प्रथम पुर्तगाली फैक्ट्री कोचीन में स्थापित किया | प्रथम पुर्तगाली केन्द्र कोचीन में स्थापित की | पूर्वी भारत के कोरोमण्डल तट के पुलीकट,मसुलीपट्टनम में व्यापारिक केन्द्र बनाए | 1536 मेंबंगाल के चटगाँव एवं सतगाँव में कारखाने स्थापित किए |

सर्वोच्च सता के लिए सघंर्ष

- 1505 ई. में फ्रासिस्कों द अल्मोड़ा भारत में प्रथम पुर्तगाली वांयसराय बनकर आया | 1509 ई. मेंइसका उतराधिकारी अल्बकर्क बना जो 1510 ई. में बीजापुर से गोआ छीन किया और इसे पुर्तगाली मुख्यालय बनाया |
- 1668 ई. में पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन की शादी बिटिश राजकुमार चाल्स से हुआ | अंग्रेजो को दहेज स्वरूप बम्बई नगर प्राप्त हुआ |
- अंत में पुर्तगाली के हाथ में गोआ,दमन,दीव रह गया जिसे 1961 ई. में भारत ने नियंत्रण कर लिया |

डच

- 1602 ई. में एक चार्टर द्वारा डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना डच सरकार के द्वारा किया गया | भारत में डचोंका पहला कारखाना 1605 मेंमसुलीपट्टनममें और दूसरा कारखाना पोतापुली में स्थापित हुआ | सूरत एवं आगरा में 1621,पटना में 1638 और चिन्सुरा 1653 ई. में कारखाना स्थापित हुआ |
- डचो की शकित को रोकने के लिए भारत में डच एवं बिटिश के बीच 1759 ई. में वेदरा में युद्ध हुआ | डच पराजित हुए |

इगलिश डच ईस्ट इंडियाकंपनी

- 1599 ई. में पूर्व के साथ व्यापार करने के लिए साहसी व्यापारियों के एक समुह ने एक संगठन बनाया | 31 दिसम्बर 1600 ई. को महारानी एलिजाबेथ ने एक चार्टर द्वारा डच ईस्ट इंडिया कंपनी को व्यापार करने की अनुमति प्रदान की |
- अंग्रेजो की पहली फैक्टरी 1608 ई. में सूरत में बनी थी | मुसलीट्टम 1611 ई. में दक्षिण भारत की पहली और भारत की दूसरी फैक्टरी अंग्रेजो ने स्थापित की | 1639 ई. में मद्रास के स्थानीय राजा से पटे पर लेकर किलेबंदी की गई जिसे फोर्ट सेट जार्ज के नाम से जाना जाता है |
- पूर्व के 1663 ई. मेंबंगाल के सूबेदार शाहुजहाँ से 3000 रु. के बदले व्यापार की अनुमति मिल गयी । 1651 ई. में हुगली में फिर पटना में कारखाना स्थिपित किया गया
- 1717 ई. में मुगल बादशाह फर्रूखशियर ने 1691 के फरमान को स्वीकार कर इसका विस्तार गुजरात एवं दक्कन में कर दिया ।

डेन

- 1616 ई. में डेनिस कम्पनी का भारत में आगमन हुआ इसने तामिलनाडू के टंकुवार में 1620 में एवं 1676 ई. में सीरमपुर में व्यापार का कारखाना खोला ।

फ्रेच

- 1664 ई. में फ्रासीसी ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापित हुई। भारत में पहला फ्रांसीसी कारखाना 1668 ई. में सूरत में स्थापित हुआ
- 1690-92 ई. में फ्रांसीसी ने कलकता के निकट चन्द्रनगर नामक नगर बसाया ।

सहायक संधि

- सहायक संधि की अवधारणा फ्रांसीसी गवर्नर डुप्ले की था औपचरिक रुप से इसका सर्वप्रथम उपयोग 1798 ई. में गवर्नर जनरल बने वेलेजली ने किया ।
- हैदराबाद पहला राज्य था जिसने 1798 ई. में सहायक संधि को स्वीकार किया । मैसूर 1799,तंजौर,अवध 1801, पेशवा1802, भोसले 1803, सिधिया 1804 में सहायक संधि स्वीकार कर लिए

व्यापगत सिध्दान्त

- इस समय डलहौजी गवर्नर जनरल था । इसने अपनी साम्राज्य नीति पक्ष का लेते हुए व्यापगत सिध्दान्त के तहत 1848 ई. में सतारा, 1849 ई. जैतपुर और सम्मलपुर ,1853 में झाँसी एवं 1854 में नागपुर को अंग्रेजो साम्राज्य में मिला लिया ।
- अवध को 1856 ई. में कुशासन के आरोप में अंग्रेजो साम्राज्य में मिला लिया गया ।
- 1876 ई. में महारानी को कैसर-ए-हिन्द की उपाधि दी गई । इसी के साथ भारतीय देशीय राजा सामंत के समान बन गये ।
- अंग्रेजो भू-राजस्व व्यवस्था
- 1765 ई. में इलाहाबाद की संधिद्वारा मगुल बादशाह से अंग्रेजो को बंगाल की दीवांनी प्राप्त हो गई
- 1786 ई. में कार्नवांलिस गवर्नर जनरल बनाने पर भू- राजस्व की समस्या को सुलझाने पर ध्यान दिया । कार्नवांलिस ने सर जान शोर एवं चार्ल्स ग्रांट से सलाह करके स्थायी बंदोबस्त को लागू किया गया । कार्नवांसिल ने 1790 ई. में 10 वर्षीय भू-राजस्व व्यवस्था लागू किया और भुमि का मालिक जमीदार को माना । 1793 ई. में इस बंदोबस्त को 10 वर्ष के स्थान पर स्थायी कर दिया गया ।
- यह बंदोबस्त अग्रेज भारत के 19 % भाग पर लागू था । इस भाग में बिहार, बंगाल, उडीसा, यु.पी. का बनारस खण्ड तथा उतरी कर्नाटक शामिल था
- जमीदार वसूली राशि का 89 % सरकार को जबकि 11% अपने पास रखते थे अर्थात 10/11 सरकार के 1/11 अपने पास ।
- रैयतवांडी बंदोस्त
- इस व्यवस्था में भुमि के वांस्तविक मालिक किसानो के साथ यह बंदोबस्त किया गया । पहली बार 1792 में कर्नल रीड द्वारा बारामहल जिले से शुरू की गयी । 1820 में मद्रास में मनुरो द्वारा यह व्यवस्था बनायी गयी तथा 1825 में बंबई में लागू किया गया । यह अंग्रेजी भारत 51 % भाग पर लागू

था । मद्रास बंबई के अलावां असम एवं कुछ अन्य भाग शामिल थे ।

महलवांडी व्यवस्था

- भूमि पर ग्राम समुदाय का सामुहिक अधिकार स्वीकार किया गया यह ब्रिटिश भारत के लगभग 30% भाग पर लागू था | इसमेंउत्तर प्रदेश,मध्य प्रांत एवं पंजाब शामिल था ।

भारत में आधुनिक उघोगो का विकास

- भारत में आधुनिक उघोगो के विकास का प्रारम्भ 1850 के बाद हुआ सबसे पहलीसुती वस्त्र निर्माण का कारखाना बॉम्बे स्पिनिग एण्ड विविगं कम्पनी के नाम से 1854 ई. में कावस जी डावर ने बबई में शुरू की थी ।
- पहला जूट मिल 1855 ई. में जार्ज ऑकलैण्ड द्वाराबंगाल के रिशरा में स्थापित किया गया ।
- 1872 में कुल्टी में लोहा उत्पादन का कारखाना खोला गया ।
- 1907 में टाटा आयरन कम्पनी की स्थापना की गई यहाँ 1911 ई. में कच्चा लोहा का उत्पादन शुरू हुआ एवं 1913 में इस्पात का उत्पादन शुरू हुआ ।
- प्रथम चीनी मिल 1909 में खोला गया ।
- भारत की पहला बैक हिन्दुस्तान बैक था हरिकिशन लाल ने 1894 ई. में "पंजाब नेशनल बैक " की स्थापना की ।
- 1881 का कारखाना अधिनियम
- 7 वर्ष से कम आयु के बच्चो को काम नही , 7-12 वर्ष के बच्चों का काम 9 घटा प्रति दिन । एक घंटा की छुट्टी । 1महीने में चार दिन की छुटटी ।
- 1891 का कारखाना अधिनियम
- 9 वर्ष से कम आयु के बच्चे के काम पर रोक ,9-12 वर्ष के बालक के काम की अवधि 7 घंटा ।
- 1911 के कारखाना अधिनियम
- पुरुषो को कार्य करने की अवधि 12 घंटा । अल्पायु बच्चो को रात्री में काम पर रोक ।

प्रमुख विद्रोह

बंगाल एवं पूर्वी भारत के विद्रोह

सन्यासी विद्रोह

- तीर्थ यात्रा पर जीने के प्रतिबध के कारण 1763-1800 ई. में सन्यासी विद्रोह हुआ इस विद्रोह का उल्लेख बकिमचन्द्र चटर्जी ने अपने उपन्यास आनंद मठ में किया है

मुण्डा विद्रोह

- 1899 तथा 1900 ई. में छोटानागपुर तथा सिंहभूम जिले के मुण्डा लोगों ने कम्पनी की सेना के साथ सघंर्ष किया |

संथाल विद्रोह

- यह विद्रोह सिध्दुएवं कान्हु के नेतृत्व से भूमिकर अधिकारियों द्वारा किए गए वांले दुव्यर्वहार एवं अत्याचार के विरुद्ध था |

कोल विद्रोह

- यहविद्रोह 1820 से 1836 तक ई. में हुआ | यह विद्रोहराँची,सिंहभूमि,पलामू,हजारीबाग के क्षेत्रों में व्यापक रूप से फैला |

अहोमविद्रोह

- असम के अहोम कुलीन वर्ग के व्यक्तियो ने कम्पनी पर वर्मा युद्ध के समय किए गए वांदे से मुकरने का आरोप लगाया

और विद्रोह किया | इस विद्रोहका नेतृत्व गोमधर कुँअर ने किया | यहविद्रोह 1828 ई. में हुआ |

पश्चिमी भारत के विद्रोह

भीलविद्रोह

- भील जाति के लोग पश्चिमी तट पर खानदेश जिले में रहते थे | 1818 ई. से 1831 ई. में कृषि सबधित समस्याओं को लेकर सेवराम के नेतृत्व मेंविद्रोह कर दिया |

सूरत का नमक आंदोलन

- 1844 ई. में सरकार ने जब नमक का दम 50 पैसा से बढाकर 1 रू किया तो सूरत के लोगों ने विद्रोह कर दिया |

रामोसीविद्रोह

- पश्चिमी घाट पर रहने वाली जाति ने 1822 ई. में चितर सिंह के नेतृत्व मेंअगेजी शासन के खिलाफ विद्रोह किया |
- अन्य विद्रोहो में बहावीं आंदोलन महत्वपूर्ण था | यह आंदोलन 1830 ई. से 1860 ई. तक चला | इसके प्रवर्तक रायबरेली के सैयद अहमद थे | सैयद अहमद इस्लाम धर्म में हुए सभी प्रकार के परिवर्तन और सुधारों के विरुद्ध थे |
- 1776-77 मेंबंगाल के फकीरों काविद्रोहब्रिटिश सरकार के विरुद्ध हुआ | इस विद्रोहका नेतृत्व मजनूनशाह तथा चिराग अली शाह ने किया था |
- 1857 के विद्रोह स्वरूप
- सरजाँन लारेंस एवं सीले - पूर्णतः सिपाही विद्रोह
- डिजरैली - राष्ट्रीय विद्रोह
- जेम्स आउटम एवं डब्ल टेलर -अग्रोजो के विरुद्ध हिन्दू-मुस्लमानो काषड्यंत्र
- एल.आर.रीज - ईसाई धर्म के विरुद्ध एक धर्म युद्ध
- टी.आर.होम्ज - सम्यता एवं बर्वरता का सघंर्ष
- अशोक मेंहता - सुनियोजित स्वतंत्रता सग्राम

सैनिक विद्रोह

- 1764 ई. में बक्सर के युद्ध के बाद हैक्टेर मुनरो के नेतृत्व मेंएक सैनिक टुकडी विद्रोह कर दिया |
- 1806 मेंवेल्लोर के सैनिको ने विद्रोह कर दिया |
- 1825 ई. असम के तोपखाने मेंविद्रोह कर दिया |

कारण

राजनीतिक कारण

- **डलहौजी की हडपनीति एवं कुशासन के** आरोप में भारतीय राजाओं को अंग्रेजी साम्राज्य के अधीन करने के कारण शासक वर्ग एवं जनता नाराज हो गई |

आर्थिक कारण

- ब्रिटिश व्यापार नीति, भुराजस्व नीति और औद्योगिक नीतियों ने भारत को मात्र ब्रिटिश का आर्थिक उपनिवेश बना दिया|

सामाजिक धार्मिक कारण

- ईसाई मिशनरी को प्रसार के लिए खुली छुट का देना | सती प्रथा का अंत , बाल हत्या तथा नर हत्या पर प्रतिबंध लगाया | और विघवांपुनर्विवांह को प्रोत्साहन दिया गया |

सैनिक कारण

- कैनिंगने जनरल सर्विस एक्ट पारित किया जिसके तहत सैनिकों के लिए समुद्री पार जाना भी अनिवार्य बना गया |

तात्कालिक कारण

- इंफील्ड रायफल में गाय एवं सुअर के चर्बी युक्त कारतूस का प्रयोग किया जाना |
- 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी में मगल पाण्डे नामक एक सैनिक ने विद्रोह कर अपने एजुटेंट की हत्या कर दी | इन्हें दण्ड दिया गया | 10 मई 1857 को मेंरठ में 85 सैनिको ने खुला विद्रोह कर दिया | 11 मई को दिल्ली पहुँचे और 12 मई हो दिल्ली पट अधिकार कर लिया | बहादुर शाह द्वितीय को भारत का सम्राट घोषित कर दिया |

केन्द्र	नेतृत्व	विद्रोह दबाने वांले ब्रिटिश अधिकारी
दिल्ली	बहादुर शाह एवं बख्त खाँ	निकोलसन एवं हडसन
कानपुर	नाना साहब एवं तात्याँ टोपे	कैम्पबेल
लखनऊ	बेगम हजरत महल	हैवलाक
झांसी एवं ग्वालियर	रानीलक्ष्मीबाई ,तात्यटोपे	ह्युरोज
जगदीशपुर	कुअँर सिंह	विलियम टेलर एवं मेंजर विन्सेंट आयर

- 1857 के विद्रोह की असफलता के मुख्य कारण उनके बीच राष्ट्रीय एकता का अभाव, कुशल रणनीति का न होना था |
- 1857 के विद्रोह के परिणाम में जहां भारतीयों को अपनी स्वीधीनता का अस्त्र मिल गया | वहीं अब ब्रिटिश शासन में भी परिवर्तन हुआ | 1858 ई. में ब्रिटिश संसद ने एक कानून पारित कर ईस्ट इंडिया कम्पनी को समाप्त कर दिया और अब भारत के शासन का पूरा अधिकार महारानी के साथ में आ गया |

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पूर्व संस्थाए

- भारत कि पहली राजनीतिक सस्था 1838 ई. में लैंड होल्डर सोसाइटी के नाम से कलकता में बनी | इसकी शुरुआत बिहार,बंगाल,उड़ीसा के जमींदार वर्गो के हितो की रक्षा के लिए किया | 1843 ई. ब्रिटिश इंडियन सोसाइटी का गठन किया गया | 1851 में दोनों का गठन हो गया और ब्रिटिश इंडियनएसोसिएशन का गठन किया गया |
- 1852 ई. मेंमद्रास नेटिव एसोसिएशन और बॉम्बे एसोसिएशन की स्थापना की गई |
- 1866 ई. में दादा भाई नौरोजी ने लंदन में ईस्ट इंडियन एसोसिएशन की स्थापना की इसका उद्देश्य भारतीय प्रश्नों पर विचार करना और भारत के कल्याण के दिशा ने ब्रिटिन के नेताओ को प्रभावित करना |
- नौरोजी का जन्म 1825 ई. में हुआ था इन्हें भारत का पितामह कहा जाता है |

- जुलाई 1876 ई. में सुरेन्द्र नाथ बनर्जी तथा मोहन बोस के नेतृत्व में इंडियन एसोसिएशन की स्थापना किया गया |
- 1884 ई. में मद्रास एसोसिएशन की स्थापना किया गया | 1885 ई. में फिरोज शाह मेंहता के टी. तेलग और तैयबजी ने मिलकर प्रेसीडेसी एसोसिएशनकी स्थापना की |

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

- कांग्रेस की स्थापना का श्रेय ए.ओ.ह्यूम को दिया जाता है इसका प्रथम अधिवेशन दिसम्बर 1885 ई. में बम्बई में हुआ | इसमें 72 सदस्य शामिल थे इस अधिवेशन की अध्यक्षता डब्लू सी. बनर्जी ने किया |
- लाल लाजपत राय ने काग्रोस की स्थापना को सुरक्षा वांल्व कहा |
- कांग्रेस के उदारवांदी चरण 1885 से 1905 ई. तक रहा | इस समय नेता दादाबाई नौरोजी, महादेवगोविन्द राणाडे,फिरोज शाह मेंहता,सुरेन्द्रनाथ बनर्जी , गोपाल कृष्ण गोखले मुख्य थे |
- 1886 ई. मेंकांग्रेस अधिवेशन में 436 प्रतिनिधि सदस्य हो गये |
- कांग्रेस की स्थापना के समय डफरिन गवर्नर जनरल था |

उग्रवांदी चरण

- कांग्रेसका दूसरा चरण 1905 से 1915 तक रहा | इस पर उग्रवांदियो का प्रभाव रहा | इस समय आंदोलनका नेतृत्वबालगंगाधर तिलक,लाला लाजपत राय ,बिपिन चन्दपाल और अरविन्द घोष के रहे थे |उग्रवांदियोका प्रमुख लक्ष्य स्वराज प्राप्त करना था उन्होंने विदेशी मॉल का बहिष्कार,स्वदेशी और राष्ट्रीय शिक्षा पट बल दिया |
- तिलक ने मराठा पत्रिका अंग्रेजोमें और केसरी मराठी में निकली | 1893 ई. में तिलक ने गणपति उत्सव और 1895 ई. में शिवजी महोत्सव का आरम्भ किया |
- तिलक पहले व्यक्ति थे जिन्होंने महाराष्ट्र के किसानों को सलाह दी कि जब भी सूखा,अकाल आदि से फसल नष्ट हो तो लगन देना बंद कर दे|
- 20 जुलाई 1905 को कर्जन-ने-बंगाल-विभाजन किया | 16 अक्टूबर को इसे लागू किया गया | इस दिन को शोक दिवस के रूप में मनाया गया |
- बंगाल विभाजन के विरोध मेंस्वदेशी आंदोलन शुरू किया गया |1905 में गोखले की अध्यक्षता में कांग्रेस के बनारस अधिवेशन मेंबंगालमें स्वदेशी आंदोलन और बहिष्कार आंदोलन का समर्थन किया गया । 1906 के कलकता अधिवेशन में नौरोजी ने अध्यक्षता करते हुए कहा कांग्रेस का उद्देश्य स्वराज की स्थापना करना है ।
- 1907 के सूरत अधिवेशन आंदोलन को लेकर पार्टी में विभाजन हो गया । मिन्टो में मार्ले को लिखा । सूरत में कांग्रेस का विभाजन हमारी सबसे बड़ी जीत है ।
- इसी समय अंग्रेज के सहयोग से ढ़ाका के नवाब ने इंडियन मुस्लिम लीग की स्थापना 1906 ई. में की ।
- इसी समय तिलक को बंदी बनाकर 6 वर्ष के लिए मांडले जेल भेजा गया । यही इसने गीता रहस्य नामक पुस्तक लिखी ।

क्रांतिकारी आंदोलन

- क्रांतिकारी आंदोलन की शुरूआत महाराष्ट के चितापावन ब्राहाण ने 1897 ई. मेंW.C Rand की हत्या करके की ये दोनों भाई दामोदर चापेकर और बाल कृष्ण चापेकर थे ।
- अरविन्द घोष ,वारीन्द्र घोष,भूपेन्द्र दत चटोपाध्याय ने युगांतर का संपादन किया । मैडम कामा ने वंदे मातरम का सम्पादन किया ।
- महाराष्ट मेंवी.डी सावरकर और गणेश सांवरकर नामक दो भाइयों नें 1904 ई. में अभिनव भारत नामक संगठन की स्थापना की ।
- 1908 ई. मेंमुजफ्फ़पुरके एक बदनाम जज किंग्सर्फार्ड की हत्या के प्रयास में प्रफुल्ल ने गोली मारकर आत्महत्या कर ली और खुदीराम बोरा को गिरफ्तार के बाद फाँसी दी गई |
- अरविन्द घोष पांडिचेरी चले गए जहाँ उन्होंने एक आश्रम की स्थापना की | उन्होंने सावित्री और द लाइफ डिवांइन की रचना की |
- प्रथम विश्व युद्ध के समय 1914 ई. मेंकामगाटा मारू प्रकरण हुआ | गुरदीप सिंह नामक एक भारतीय सिगांपुर से एक कामागाटा मारू जहाज लेकर वेंकुवर पहुँचा |
- 1913 ई. में लाल हरदयाल और सोहन सिंह भाकना ने सैन फ्रांसिस्को में गदर पार्टी की स्थापना की | इसने नवम्बर 1913 में गदर पत्रिका निकाली,जो अंग्रेज़ी,उर्दू और गुरूमुखी तीनों में प्रकाशित हुआ |
- माण्डले जेल से लौटने के बाद तिलक ने कांग्रेस के साथ समझौते की नीति अपनाई जिसमें एनी बेसेंट ने सहायता की तिलक ने 28 अप्रैल 1916 को बेलगाँव मेंहोमरूल लीग की स्थापना की | एनी बेसेंट ने भारत में आयरलैण्ड की तरह सितम्बर 1916 में मद्रास मेंहोमरूल लीग की स्थापना की |
- तिलक को वेलेंटाइन शिरोल ने भारतीय अशांति का जनक कहा |
- 1916 मेंकांग्रेस के लखनऊ अधिवेशनमेंकांग्रेसकेदोनों धड़े फिर से एक हो गए | लखनऊ के कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष अम्बिका चरण मजूमदार थे | लखनऊ में अपने पुराने मतभेद भुलाकर कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने भी समझौता कर लिया | इसे लखनऊ समझौता के नाम से जाना जाता है |
- 1914 ई. में सरकार ने अबुल कलाम आजाद के पुत्र अल हिलाल और मौलाना मोहम्मद अली के पत्र कामरेड को बंद कर दिया |

सम्प्रदायवांद का विकास

- आगा खाँ के जुड़ने के बाद मुस्लिम लीग और आखिल भारतीय मुस्लिमलीग की स्थापना हुई| मौलाना मोहम्मद अली,मौलाना जफर अली खान और मजहरूल के नेतृत्व में उग्र राष्ट्रवादी अहरार आंदोलन की स्थापना हुई | 1911 ई. में तुर्की एवं इटली के बीच युद्ध की स्थिति में भारत से डा.एस.ए. अंसारी के नेतृत्व में तुर्की की सहायता के लिए एक मेंडिकल मिशन भेजा गया |
- 1909 ई. में पंजाब हिन्दू सभा की स्थापना हुई | अप्रैल 1915 ई. में कासिम बाजार के राजा की अध्यक्षता में अखिल

भारतीय हिन्दू महासभा का पहला अधिवेशन बनारस में हुआ |

गाँधी जी

- गाँधी जी 24 वर्ष की उम्र में 1893 में दादा अब्दुल्ला नामक गुजराती व्यापार का मुकदमा लड़ने के लिए दक्षिण अफ्रीका के डरबन गए | वहाँ"नटाल भारतीय कांग्रेस"का गठन किया | गाँधी जी ने टॉलस्टॉय फार्म की स्थापना की जो बाद में गाँधी जी आश्रम बना गया |
- गाँधी जी 46 वर्ष की उग्र में जनवरी 1915 ई. को भारत लौट आए | 1916 ई. में अहमदाबाद के पास साबरमती आश्रम की स्थापना की |
- गाँधी जी ने सत्याग्रह का पहला प्रयोग बिहार के चम्पारन जिले में 1917 ई. में किया | यह नील की खेती से संबंधित था | 1918 में गाँधी जी ने अहमदाबाद के मिल मजदूरो के पक्ष मेंआंदोलन किया | 1918 में गुजरात के खेडा जिले के किसानों की मदद मेंआंदोलन किए |

रौलेट सत्याग्रह

- रौलट की अध्यक्षता में एक कमेटी ने दो विधेयक बनाए जिसे रौलेट बिल नाम दिया | रौलेट एक्ट एक काला कानून था,जिसका उद्देश्य था कोई वकील नही कोई अपील नही कोई दलील नही | फरवरी 1917 मेंगाँधी जी ने सत्याग्रह सभा बनाई |
- 13अप्रैल 1919 को वैशाखी के दिन सैफुद्दीन किचलू और डा. सत्यपाल के गिरफ्तारी के विरोध में लोग जलियाँवांला बाग में जमा हुए | जनरल डायर ने निहत्थे लोगों पर गोलियों चलाई जिसमें 379 लोग मार गए | रविन्द्रनाथ टैगोर ने इस पर काण्ड के विरोध स्वरूप अपनी नाइट उपाधि लौटा दी |

खिलाफत और असहयोग आंदोलन 1919-1922

- तुर्की की समस्या को लेकर भारतीय मुसलमान अली बंधु मौलाना आजाद हकीम ने खिलाफत कमेटी का गठन किया और नवम्बर 1919 में दिल्ली में अखिल भारतीय खिलाफत सम्मेलन का आयोजन किया |
- खिलाफत की समस्या को लेकर गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन आरम्भ किए | 31 अगस्त 1920 को खिलाफत एवं असहयोग आंदोलन शुरू हुआ | 1 अगस्त 1920 को तिलक की मृत्यु हो गयी | असहयोग आंदोलन चलाने के लिए तिलक स्वराज्य कोष की स्थापना की गई जिसमें छः महीने में एक करोड रूपया आ गया |
- 5 फ़रवरी 1922 को गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा नामक गाँव में 3000 किसानों ने पुलिस थाने में आग लगा दी , जिससे 22 पुलिस कर्मी मारे गए | गाँधी जी ने 12 फ़रवरी 1922 को गुजरात के वारदोली नामक स्थान पर एक मीटिंग कर असहयोग आंदोलनवापस ले लिया |
- उधर तुर्की में मुस्तफा कमाल पाशा ने नवम्बर 1922 मेंसुल्तान को सता से वंचित कर खिलाफत आंदोलन भी बंद हो गया
- असहयोग आंदोलन शुरू करने के पहले ही गाँधी जी ने प्रथम विश्व युद्ध के समय दिए गए पुरस्कार कैसर-ए-हिन्द को लौटा दिया |

- मो. अली पहले नेता थे |जिन्हें सर्वप्रथम असहयोग आंदोलन के समय गिरफ्तार किया गया |
- स्वराज्य पार्टी की स्थापना एक जनवरी 1923 में की गयी | अध्यक्ष चितरंजन दास थे | मोती लाल नेहरू सचिव थे | 1923 के चुनाव में स्वराज्य पाटी को मध्य प्रांत बहुमत मिला | 1 जून 1925 को सी.आर. दास की मृत्यु हो गयी |

क्रांतिकारी आंदोलनका दूसरा चरण

- इस समय पुराने क्रांतिकारी राम प्रसाद विस्मल,योगेश चटर्जी, सचीन्द्रनाथ सान्याल आगे आए | सचीन्दसान्याल द्वारा लिखित पुस्तक बंदीजीवन क्रांतिकारीआंदोलनकारियों का मुख पत्र बन गया |
- क्रांतिकारियोंका कानपुर में एक सम्मेलन हुआ | इसमें हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी अथवा हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का गठन किया गया| 9 अगस्त 1925 को लखनऊ के पास काकोरी षड्यंत्र को अजाम दिया गया | इसमें रामप्रसाद बिस्मिल,अशफाक अल्ला खाँ , राजेन्द्र लाहिड़ी और रोशन सिंह को फाँसी दी गई | चन्द्रशेखर आजाद फरार हो गए |
- सितम्बर 1928 को दिल्ली मेंक्रांतिकारीका एक सम्मेलन हुआ जिसमें अपने संगठन का नेतृत्व चन्द्रशेखर आजाद के हाथोंमें देकर उसका नाम बदलकर हिन्दुस्तान सोसलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी कर दिया |
- 30 अक्तुबर 1928 को साइमन कमीशनके लौहार विरोधी आंदोलनमें लाठी से घायल कर लाला लाजपतराय राय की मृत्यु हो गयी |
- 8 अप्रैल 1929 को भगत सिंह, बटुकेश्वर दत,राजगुरु ने केन्द्रीय विधान सभा में बम फेका इसके फलस्वरूप 23 मार्च 1931 को भगत सिंह,बटुकेश्वर दत और सुखदेव को फाँसीदी गई |
- विद्रोही संगठनों में चटगाँवक्रांतिकारीका गुट अधिक सक्रिय था | जिसका नेता सूर्यसेन था | 12 जनवरी 1934 को इसे फाँसी दी गई |
- 27 फ़रवरी 1931 को चन्द्रशेखर आजाद इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में एक पुलिस मुठभेड़ मेंशहीद हुए |

साइमन कमीशन

- 1919 के भारत शासन अधिनियम के प्रावधानोंके सफलता एवं असफलता के जाँच के लिए कमीशन का गठन होना था | नवम्बर 1927 को ब्रिटिश सरकार ने इंडियन स्टेटयुरी कमीशन का गठन किया | इसकी अध्यक्षता साइमन ने की |
- इसके विरोध के कारण में पहला कारण का गठन 2 वर्ष पूर्व कर किया, एवं कमीशन के सभी सदस्य अंग्रेजो थे |
- 3 फरवरी 1928 को साइमन कमीशन बम्बई पहुँचा|

नेहरू रिपोर्ट

- लार्ड बरकेनहेड ने काग्रेसी नेताओ को चुनोती दी कि आप में योग्यता है तो आप विभिन्न सम्प्रदायों के आपसी सहमति से एक संविधान का मसौदा प्रस्तुत करे | फलस्वरूप मई 1928 में बम्बई में एक सर्वदलीय बैठक का आयोजन कर मोती लाल नेहरु की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गयी | अगस्त 1928 ई. में नेहरु रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया गया |

- मोहम्मद अली जिन्ना ने नेहरु रिपोर्ट में पृथक निर्वाचक मण्डल नही होने के कारण मार्च 1929 में अपनी सुरक्षा के लियी 14 सूत्रीय मांग रखी |
- जवाहर लाल नेहरु को 1929 के लाहौर अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया गया | 31 दिसम्बर 1929 को नेहरु रिपोर्ट को निरस्त घोषित किया गया | और पूर्ण स्वराज को अपना लक्ष्य बनाया गया | 26 जनवरी 1930 को प्रथम स्वाधीनता दिवस मनाने का निश्चय किया गया |
- सविनय अवज्ञा आन्दोलन
- गाँधी जी 12 मार्च 1930 को अपने 78 अनुयायियों के साथ साबरमती आश्रम से 375 कि.मी. दूर दांडी गाँव के लिए रवाना हुए | 6 अप्रैल 1930 को दांडी पहुंचे और समुद्र तट से एक मुट्ठी नमक उठाकर नमक कानून तोड़ा | इसी के साथ सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरुआत हुई |
- पश्चिमोत्तर प्रांत पेशावर में सीमांत गाँधी के नाम से प्रसिद्ध खान अब्दुल गफ्फार खाँ के नेतृत्व में पठानों ने खुदाई खिदमतगार नामक संगठन बनाया | ये लाल कुर्ती वाले कहलाते थे |
- सुभाष चन्द्र बोस ने गाँधी जी की दांडी यात्रा के संबंधमें कहा था कि " महात्मा जी के दंधी यात्रा की तुलना एलवां से लोटने पर नेपोलियन की पेरिस मार्च से की जाती है" |
- नवम्बर 1930 ई. में रेम्ज मैकडोनाल्ड की अध्यक्षतामें लंदन में प्रथम गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया | कांग्रेस ने इसका विरोध किया | कांग्रेस की अनुपस्थिति के कारण आंदोलन असफल रहा |
- 5 मार्च 1931 को गाँधी जी डरविन से मिले और दोनों के बीच गाँधी इरविन समझौता हुआ | कांग्रेस की और से गाँधी जी और सरकार की और से इरविन ने हस्ताक्षर किये | इसे दिल्ली समझौता के नाम से जाना जाता है |
- दूसरा गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए गाँधी जी 29 अगस्त 1931 को लन्दन के लिए रवाना हुए | दक्षिणपंथी खेमेका नेता चर्चिल ब्रिटिश सरकार से इस बात के लिए सख्त नाराज था कि वह देशद्रोही फकीर को बराबरी का दर्जा देकर उससे बात कर रही है | गाँधी जी कांग्रेस के एक मात्र प्रतिनिधि थे |
- 18 अगस्त 1932 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री मैकडोनाल्ड ने साम्प्रदायिक अधिनिर्णय की घोषणा की | गाँधी जी इस समय यरवदा जेल में थे | उन्होंने इसे भारतीय एकता पर हमला किया | इसके विरोध में 20 अगस्त 1932 को आमरण अनशन पर बैठ गये |
- मदन मोहन मालवींय, राजेन्द्र प्रसाद , राज गोपालाचारी के प्रयास से गाँधी जी और अम्बेडकर के बीच एक समझौता हुआ | इसे पुन समझौता कहते हैं |
- जेल से छुटने के बाद गाँधी जी ने हरिजन यात्रा शुरू की | गाँधी जी ने दलित वर्ग को हरिजन नाम दिया | 8 जनवरी 1933 को मन्दिर प्रवेश दिवस के रूप में मनाया गया | गाँधी जी ने 1933 से साप्ताहिक "हरिजन पत्र " का प्रकाशन शुरू किया |

- ब्रिटिश सरकार ने 17 नवम्बर 1932 को तृतीय गोलमेज सम्मेलन बुलाया जो 24 दिसम्बर 1932 तक चला | कांग्रेस ने इस सम्मेलन का बहिस्कार किया |

प्रांतीय चुनाव

- कांग्रेस कार्यकारिणी समिति ने भारत शासन अधिनियम 1935 के तहत चुनाव लड़ने का फैसला किया | चुनाव जनवरी , फरवरी 1937 में हुआ | 1937 के दौरान कांग्रेस ने सात प्रान्तों में अपने मंत्रिमंडल का गठन किया | ये प्रांत थे- मद्रास, बम्बई , मध्य प्रांत, उड़ीसा , बिहार और सयुंक्त प्रांत | बाद में कांग्रेस ने पश्चिमोत्तर प्रांत, असम और पंजाब में भी मंत्रिमण्डल बनाये |
- 1938 में कांग्रेस के अध्यक्ष सुभाष चन्द्र बोस ने राष्ट्रीय योजना समिति की नियुक्ति की | 1939 में सुभाष चन्द्र बोस कांग्रेस अध्यक्ष चुने गए | परन्तु महात्मा गाँधी के विरोध के वजह से इस्तीफा दी दिया | और फारवर्ड ब्लॉक की स्थापना की |
- अक्टूबर 1939 में ब्रिटिश सरकार ने जनता से पूछे बिना ही भारत को द्वितीयविश्व युद्ध में झोंक दिया | इसके विरोध में कांग्रेस मंत्रिमण्डल ने त्याग पत्र दे दिया | मुस्लिम लीग ने इसे मुक्ति दिवस के रूप में मनाया | सितम्बर 1939 में जब नाजी जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण किया तो द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हो गया |
- 1940 के रामगढ़ कांग्रेस अधिवेशन में सरकार के साथ इस बात पर सहयोग करने का प्रस्ताव रखा कि केन्द्र में अंतरिम सरकार का गठन किया जाए | वायसराय लिनलिथगों ने युद्ध के दौरान कांग्रेस का सहयोग प्राप्त करने के लिएएक प्रस्ताव रखा जिसे " अगस्त प्रस्ताव" कहा जाता है | इस प्रस्ताव में कांग्रेस के अंतरिम सरकार गठित करने के प्रस्ताव को अस्वीकृत कर लिया |
- अगस्त प्रस्ताव से मोहभंग होने के बाद कांग्रेस ने व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू करने का निश्चय किया | अक्टूबर 1940 में सत्याग्रह शुरू हुआ | बिनोबभावे पहले सत्याग्रही थे और जवांहर लाल नेहरु दुसरे सत्यग्राही थे | इस आंदोलन का नाम " दिल्ली चलो आन्दोलन" पड़ गया |

क्रिप्समिशन

- मार्च 1942 के कैबिनेट मंत्री स्टेफर्ड क्रिप्स के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल भारत भेजा युद्ध समाप्ति के बाद संविधान सभा के गठन का प्रस्ताव दिया गया । महात्मा गाँधी ने इसे 'उत्तरतिथीय चेक' कहा |

भारत छोड़ो आंदोलन

- भारत छोडो को "अगस्त क्रान्ति" भी कहा जाता है 14 जुलाई 1942 को वर्धा बैठक में इस आंदोलन के प्रस्ताव की स्वीकृति दे दी 8 अगस्त 1942 को बम्बई में अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी की बैठक में वर्धा प्रस्ताव की पुष्टि की गई।
- 8 अगस्त 1942 को गाँधी जी ने घोषणा की "मै पूर्ण स्वीधनता से कम किसी चीज से संतुष्ट होने वांला नही हुँ "उन्होने करो या मरो का नारा दिया ।
- बलिया मेंचितुपाण्डे के नेतृत्व में पहली समानान्तर सरकार की स्थापना हुई |

राजगोपालाचारी फार्मूला या सी.आर फार्मूला

- कांग्रेस और लीग के बीच सहयोग के लिए सी.आर फार्मूलाका विकास हुआ | इसे महात्मा गाँधी का समर्थन प्राप्त था | जिन्ना द्वारा इसे अस्वीकार कर दिया गया |

बैवेल योजना

- कांग्रेस, लीग एवं अन्य नेताओं के बीच सहमति करने के दृष्टिकोण से वायसराय बैवेल ने 25 जून, 1945 को शिमला में बैठक बुलाई | इसे बैवेल योजना कहते हैं |

आजाद हिन्द फौज

- मोहन सिंह ने आई.एन.ए. का गठन किया जबकि सुभाष चन्द्र बोस द्वारा जर्मनी से सिंगापुर आकर आई.एन.ए. के नेतृत्व को संभाला तो इस जान आई |
- जुलाई 1944 में सुभाष चन्द्र बोस के द्वारा गाँधी जी को राष्ट्रपिता कहकर, संबोधित किया गया एवं गाँधी जी से आशीर्वाद मांगे |
- सुभाष चन्द्र बोस के द्वारा"जय हिन्द"एवं तुम मुझे खून दो मै तुम्हे आजादी दूँगा "का नारा दिया |

नौसैनिक विद्रोह

- 18 फरवरी 1946 को बम्बई में 'तलवार' नामक जहाज के 1100 नौ सैनिक ने नस्लीय भेद, खराब सुविधाओ एवं आई.एन.ए. सैनिक के मुकदमेमें विद्रोह कर दिए |

कैबिनेट मिशन

- एटली की सरकार द्वारा पैथिक लारेन्स की अध्यक्षता में भारत भेजा जिसमें भारत के सचिव स्टेफार्ड, व्यापार मण्डल के अध्यक्ष ए.वीं. अलैकजैडर सदस्य थे । इसका उद्देश्य सता का शांतिपूर्ण हस्तांतरण के लिए नीति निर्धारण करना था ।
- लीग ने कैबिनेट मिशन के प्रस्ताव को मानने से इंकार कर दिया | फिर 16 अगस्त 1946 को सीधी कार्यवांही दिवस मनाया गया |
- 2 सितम्बर 1946 को अंतरिम सरकार क गठन जवाहरलाल नेहरु की अध्यक्षता में हुई | इस लीग भी शामिल हुआ | ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली द्वारा 1948 तक सत्ता केन्द्र या विभिन्न प्रान्तों की सत्ता सोपने की घोषणा की गई |
- माउंटबेटन योजना
- इस योजना के अनुसार भारत और पकिस्तान दो राष्ट्र बने | पकिस्तान 14 अगस्त एवं भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ | भारत कर गवर्नर जनरल माउटबेंटन जबकि पकिस्तान में मु. अली जिन्ना बने |
- देशी रियासतों को भारत या पकिस्तान किसी एक में मिलना अनिवार्य | सीमा निर्धारण के लिए सीमा आयोग रेडक्लिफ आयोग बना |

भारत में सिविल सेवाका विकास

- कार्नवालिस द्वारा सिविल सेवा को व्यवस्थित किया गया | डी.ऍम.एवं दी.सी.के पद को अलग-अलग कर दिया गया | इस सेवा को स्टील फ्रेम ऑफ़ इंडिया के नाम से जाना जाता है |
- 1853 के अधिनियमों के अनुसार आई.सी.एस.में नियुक्ति के लिए प्रतियोगिता परीक्षा का प्रावधान |
- 1858 में सिविल सर्विस सेवामें भर्ती की अधिकतम आयु 23 वर्ष जो 1878 में 19 वर्ष कर दी गयी |

भारत में प्रेस का विकास

- भारत में प्रिटिंग प्रेस लाने का श्रेय पुर्तगालियो को है 1557ई. में गोवांमें कुछ पादरी लोगों ने भारत में पहली पुस्तक छापी |
- 1684 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में प्रिटिग प्रेस की स्थापना की |
- भारत में पहला समाचार पत्र कम्पनी के विलियम वोल्टस ने 1776 ई. में निकालने का प्रयास किया पर असफल रहा । सबसे पहले भारत में समाचार पत्र निकाले का श्रेय जेम्स आगस्टस हिक्की को 1780 में मिला जब बंगाल गजट का प्रकाशन किया ।
- **कुछ महत्वपूर्ण पत्र**

पत्र	सम्पादक	भाषा
हिन्दू पैट्रियोट	हरिश्चन्द्र मुखर्जी	अंग्रेजी
हिन्दू	रानाडे	अंग्रेजी
भारत मित्र	वांल मुकुन्द	हिन्दी
नव जीवन,हरिजन	गाँधी जी	गुजराती
इडिपेंडेंस	मोती लाल नेहरू	अंग्रेजी
अलहिलाल	अबुल कलाम आजाद	उर्दू
कामरेड	मुहम्मद अली	अंग्रेजी
कामनवेल ,न्यू इंडिया	एनी बेंसेंट	अंग्रेजी

बंगाल के गवर्नर जनरल

- क्लाइव 1757 से 1760 ई.| भारत में ब्रिटिश राज्य कासंस्थापक था | इनके समय में श्वेत विद्रोह तथा बंगालमेंद्वैध शासन प्रणाली लागू हुयी | इसके बाद -
- वेन्सिटार्ट (1760से65)
- क्लाइव (1665से67)
- वेरेल्स्ट (1667से69)
- कार्टियर(1769से72)

बंगाल का गवर्नर जनरल

वांरने हेस्टिग्स (1772 ई.-1785 ई.)

- गवर्नर जनरल बना । सरकारी खजाना मुर्शीदा बाद से कलकता स्थानांतरित । दीवांनी फौजदारी अदालतों की शुरूआत की | 1784 में दक्षिण एशियाटिक सोसाईटी आँफ बंगाल की स्थापना की । इसके समय रूहेला युद्ध, प्रथम मराठा युद्ध तथा द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध हुआ |
- इसके समय में ही 1781 ई. में कलकत्ता में मुस्लिम शिक्षा के विकास के लिए प्रथम मदरसा स्थापित किया | 1775 ई. मेंनन्द कुमार को फाँसी की सज़ा तथा 1778 ई. में बनारस के राजा चैत सिंह के साथ दुव्यर्वहार किया | जीनाथन डंकन ने बनारस में संस्कृत महाविघालय 1791 ई. की स्थापना की |

लार्ड कार्नवांलिस(1786 ई.-1793 ई.)

- इसके समय में तृतीय मैसूर युद्ध तथा श्रीरंग पट्टनम की संधि 1792 ई. हुई थी | कार्नवालिस कोड का निर्माण करवांया | कार्नवांलिस ने पुलिस में सुधार के लिए कार्य भी किया तथा

1793 ई. बंगालमेंस्थायी बंदोबस्त लागू किया जिसके तहत जमींदारों को अब भू-राजस्व का 10/11 भाग कंपनी को देना था तथा 1/11 भाग अपने पास रखना था इत्यादि |

सर जॉन शोर(1793 ई. -1798 ई.)

- अहस्तक्षेप की नीति अपनायी सिर्फ अवध के उतराधिकार के मामले में हस्तक्षेप किया गया तथा 1795ई. में निजामों तथा मराठों के मध्य युद्ध इसके समय हुआ |

लार्ड बेलेजली(1798 ई. - 1805 ई.)

- बेलेजली के नेतृत्व मेंअंग्रेजों ने चतुर्थी मैसूर युद्ध किया | जिसमें टीपू सुल्तान मारा गया | सहायक संधिकी शुरुआत की |

जॉर्ज बार्लो(1805 ई. - 1807 ई.)

- उसके समय में वेल्लोर विद्रोह (1806) हुआ जिसमें अनेक अंग्रेज सैनिक मारे गये |

लार्ड मिंटो-1 (1807 ई.-1813ई.)

- 1813 ई. का चार्टर अधिनियम पारित तथा चार्ल्स मेंटकॉफ को मिंटो ने ही रणजीत सिंह के दरबार में भेजा था जहाँ 1809 ई. में अमृतसरकी संधिहुई |

लार्ड हेस्टिंग्स (1813 ई.-1823 ई.)

- 1814-16 ई. में नेपाल युद्ध तथा 1816 ई. में सुंगौली की संधिहुई | 1818 ई. में अंतिम मराठा युद्ध इत्यादि |

लार्ड एमहर्स्ट(1823 ई.- 1828 ई.)

- इसके समय में प्रथम आंग्ल-बर्मा युद्ध (1824-26ई.) लड़ा गया | 1824 ई. में बैरकपुर का सन्य विद्रोह भी हुआ | भरतपुर का घेरा भी इस काल में हुआ था|

लार्डविलियम बैंटिक (1828ई.- 1835ई.)

- यह भारत का प्रथम गवर्नर जनरल बना | इसके समय में ही 1829 ई. में सती प्रथा का अंत | ठगी की समाप्ति का श्रेय (1830ई.) तथा वांल हत्या को प्रतिबंधित तथा इसी के समय मैकाले की सिफारिशों के बाद अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम स्वीकार कर लिया गया था |

लार्ड चार्ल्से मेंटकाल्फ (1835ई.-1836ई.)

- प्रेस एक्ट पारित किय जिसके तहत भारतीय समाचारपत्रों पर आरोपित नियत्रंण को समाप्त कर दिया गया । इसे भारतीय प्रेस का मुकितदाता कहा जाता है

लार्ड एलनबरो 1842 से 1844

आकलैण्ड

- प्रथम ब्रिटिश अफगान युद्ध (1833 ई.-1842) जिसमेंअंग्रेजो को पराजय का सामना करना प ड़ा और भारी नुकसान भी उठाना पडा ।

लॉर्ड एलिनबरो (1842ई.- 1844ई.)

- इसके समय 1833 के एक्ट द्वारा 1843 में दास प्रथा को प्रतिबंधित कर दिया गया
- इसके समय प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध समाप्त हुआ और दास-प्रथा का उन्मूलन हुआ
- इसने अगस्त 1843 में सिंध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया ।

लॉर्ड हार्डिंग(1844ई.- 1848 ई.)

- प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध 1845 ई. -1846 ई. जिसमें अंग्रेजी सेना ने लाहौर पर अधिकार कर लिया और सिक्ख पर लाहौर की संधि थोप दी

लॉर्ड डलहौजी(1848ई.-1856ई.)

- द्वितीय आंग्ल-सिक्ख युद्ध(1848-49 ई.) तथा पंजाब का ब्रिटिश शासन में विलय । पीगू का प्रदेश प्राप्त किया । शिक्षा सबंधी सुधारो में डलहौजी ने 1854 ई. के 'वुड डिस्पैच' को लागू किया । रूड़को में इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना सैन्य सुधार तथा उसी के समय में हुई राज्य की हडप नीति इत्यादि
- भारत के वायसराय

लॉर्ड कैनिंग(1856ई.- 1862ई.)

- लार्ड कैनिग भारत में कम्पनी द्वारा नियुकत भारत का प्रथम वायसराय था इसके समय में ही 1857 का महत्वपूर्ण विद्रोह हुआ था 1858 का भारतीय परिषद अधिनियम पारित ।कैनिंग ने ही कलकता,बंबई और मद्रास में विशवविघालय की स्थापना (1857ई.) की ।

लॉर्ड एल्गिन(1862ई.-1863ई.)

- बहावीआंदोलन का दमन तथा 1863 ई. में इसकी मृत्यु भारत में हुई

सर जॉन लारेंस(1864ई.-1868ई.)

- भूटान का महत्वपूर्ण युद्ध हुआ अफगास्तिन के संदर्भ में लारेंस ने अहस्तक्षेप की नीति का पालन किया और तत्कालीन शासक शेर अली से दोस्ती की । अकाल आयोग का गठन ।

लॉर्ड मेंयो(1869ई.-1872ई.)

- आयकर को 1% से बढ़ाकर 2.5%कर दिया ।इसने कृषि विभाग तथा भारतीय सांख्यिकीय सर्वेक्षण विभाग की स्थापना की । इसके समय में ही भारत में पहली बार जगणना की शुरूआत हुई । अजमेंर मेंमेंयो कॉलेज को स्थापना की । इसकी भारत में हत्या कर दी गई |
- **लॉर्ड नॉर्थ ब्रकु(1872ई.-1876ई.)**
- इसके समय में बिहार बंगालमें भयानक अकाल पड़ा हुआ । पंजाब का प्रसिद्ध कूका आंदोलन इसी के समय में हुआ | इसी के समय में प्रिंस ऑफ वेल्स भारत आये ।

लॉर्डलिटन(1876ई.-1880ई.)

- यह उपन्यासकार,निबं धकार ,लेखक एवं साहित्यकार था । इसे आवेन मैरिडिथ के नाम से जाना जाता था 1876-78 में भयंकर अकाल पड़ा जिसमें 50 लाख व्यकित मारे गये । इसकी जाँच के लिय रिचर्ड स्टेची की अध्यक्षता में एक अकाल आयोग का गठन ।
- 1जनवरी,1877 ई. को ब्रिटेन की महारानी को कैसर-ए-हिन्द की उपाधि से सम्मानित करने के लिए दिल्ली में भव्य दिल्ली दरबार का आयोजन किया । द्वितीय अफगान युद्ध (1878-80) हुआ ।मार्च 1878 ई. में लिटन नेवर्नाम्युलर प्रेस एक्ट पारित कर भारतीय समाचार पत्रों पर कठोर प्रतिबंध लगा दिया ।

लॉर्ड रिपन (1880ई.-1884ई.)

- इसके समय में प्रथम फैक्टरी अधिनियम,भारत में नियमित जनगणना की शुरूआत तथा स्थानीय स्वशासन की शुरूआत (1882 ई.) विलियम हंटर के नेतृत्व में शौक्षिक सुधारों के

लिए 'हंटर आयोग ' की स्थापना तथा इल्वर्ट विधयेक प्रस्तुत किया ।

लॉर्ड डफरिन(1884ई.-1888ई.)

- तृतीय आंग्ल बर्मा युद्ध (1885-86 ई.) जिसमेंबर्मा पराजित हुआ तथा इसी के समय भारतीय कांग्रेस का गठन ।

लॉर्ड लैंसडाऊन (1888ई.-1894ई.)

- भारत और अफगानिस्तान के मध्य सीमा का निर्धारण जिसे 'डूरंड लाइन के नाम से जाना जाता है | इसके समय में 1891 ई. में दूसरी फैक्ट्री अधिनियम पारित |

लॉर्ड एल्गिन द्वितीय(1894ई.-1899ई.)

- 1895 से 1898 में भयंकर अकाल पड़ा जिसकी जाँच के लिए "लायड आयोग"का गठन | मुण्डा विद्रोह तथा चापेकर बुधओ द्वारादो अंग्रेज अधिकारियों की हत्या की घटना|
- **लॉर्ड कर्जन (1899ई.-1905ई.)**
- पुलिस सुधार के लिए पुलिस आयोग का गठन । शौक्षिक अतंर्गत भारतीय विश्व विघालय अधिनियम पारित | सर्वाधिक रेलवे लाइन का विकास इसके समय में | भारतीय पुरातत्व विभाग की स्थापना की तथा सबसे महत्वपूर्ण घटना 1905 ई. बंगालका विभाजन था |

लार्ड मिंटो-2(1905ई.-1910ई.)

- इसके समय भारतीय परिषद् एक्ट 1909 ई. अथवां मिन्टों मार्ले सुधार हुआ आगा खाँ द्वारा 1906 ई. में मुस्लिम लीग की स्थापना की तथा 1907 ई. मेंकांग्रेसका सूरत अधिवेशन हुआ जिसमेंकांग्रेस दो धरोंमें विभाजित हो गया |

लार्डहार्डिंग-2(1910ई.-1916ई.)

- जॉर्ज पँचम का भारत आगमन,बंगाल विभाजन रद्द करने की घोषणा एवं भारत की राजधानी कलकता से दिल्ली स्थानांतरित करने की घोषणा शामिल है ।
- 4 अगस्त,1914 में प्रथम विशव प्रारंभ हुआ | तिलक एवं ऐनी बेंसेंट ने होमरूल लीग की स्थापना की ।

लार्ड चेम्सफोर्ड(1916ई.-1921ई.)

रौलेट एक्ट 1919 ई. पास हुआ जलियांवांला बागहत्याकांड(13 अप्रैल 1919)खिलाफतआंदोलन (1920-21ई.)एवं गाँधी के सत्याग्रह आंदोलन(1920ई.) की शुरुआत तथा तृतीय अफगान युद्ध आदि |

लार्ड रीडिंग(1921ई.-1926ई.)

- गाँधी जी द्वारा चलाया गया पहला असहयोग आंदोलन चौरी-चौरा घटना के कारण समाप्त ।प्रिन्स ऑफ वेल्स ने नवम्बर 1921 ई. में भारत की यात्रा की । भोपाल विद्रोह ,एम.एन राय द्वारा 1921 ई. में'भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी' का गठन किया गया । 1923 ई. से प्रशासनिक सेवाओंमें भारत एवं लंदन में एक साथ परीक्षा की शुरूआत तथा काकोरी रेल काण्ड इसी के काल की घटना है

लार्ड इरविन(1926ई.-1931ई.)

- साइमन कमीशन , गाँधी द्वारा 6 अप्रैल 1930 ई. में सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ । लंदन में नवम्बर,1931 ई. में प्रथम गोलमेज सम्मलेन का आयोजन । गाँधी इर्विन समझौता को हुआ|

लार्ड विलिंगटन(1931ई.-1936ई.)

- द्वितीय गोलमेंज सम्मेलन में गाँधी ने कांग्रेस की तरफ से प्रतिनिधित्व किया । पूना समझौता गाँधी व अम्बेडकर के बीच । सांप्रदायिक अधिनियम तथा 1932 में तृतीय गोलमेज सम्मलेन हुआ ।

लार्ड लिनालिथगो (1936ई.-1944ई.)

- 1 सितम्बर ,1939 को द्वितीय विश्व की शुरूआत अप्रैल 1939 ई. में सुभाष चन्द्र बोस फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना की ।1940 ई. में पहली बार पाकिस्तान की मांग की गई । अगस्त प्रस्ताव 1942 ई. में क्रिप्स मिशन भारत आया तथा 1942 ई. मेंकांग्रेस ने भारत छोडो आंदोलन प्रारंभ किया ।

लार्ड वैवेल (1944ई.- 1947 ई.)

- शिमला समझोता (1945 ई.) | कैबिनेट मैंशन (1946 ई.) में भारत आया | तथा तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने भारत को जून , 1948 ई. तक स्वतंत्र करने की घोषणा की |

लार्ड माउंटबेटन (मार्च, 1947 से जून, 1948 ई.)

- भारत का अंतिम वायसराय तथा स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर जनरल था जिसने 3 जून 1947 को यह घोषणा कि की भारत और पाकिस्तान के रूप में भारत विभाजन ही समस्या का हल है |

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (1948-1950 ई.)

- लार्ड माउंटबेटन की वांपसी के बाद 21 जून, 1948 को इनको भारत का गवर्नर जनरल बनाया गया | ये स्वतंत्र भारत के प्रथम भारतीय व अंतिम गवर्नर जनरल थे | उनके बाद भारत के संविधान के अनुसार शासन प्रमुख राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री बनने लगे |
- भारत का सवैधानिक विकास

1773 का रेगुलेटिंग एक्ट

- इस एक्ट का उदेश्य भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी की गतिविधियों को ब्रिटिश सरकार की निगरानी में लाना था | कोर्ट ऑफ़ डायरेक्टर का कार्यकाल एक वर्ष के स्थान पर 4 वर्ष का हो गया | कलकत्ता में एक सुप्रीम कोर्ट की स्थापना की गईं | इम्पे को मुख्य न्यायधीश नियुक्त किया गया |

पिटस् इडिण्या एक्ट (1784)

- गवर्नर जनरल की कउंसिल के सदस्यों की संख्या तीन कर दी गई | मद्रास, बम्बई की सरकारे , बंगाल के अधीन | छः कमिशनरों के एक बोर्ड का गठन हुआ |

1786 का एक्ट

- पिटद्वारा पेश इस अधिनियम में गवर्नर जनरल को विशेष व्यवस्था में अपनी परिषद् के निर्णय को रद्द करने तथा अपने निर्णय लागू करने का अधिकार दिया गया |

1793 का चार्टर एक्ट

- कम्पनी का भारत में व्यापार करने का अधिकार 20 वर्ष के लिए बढ़ा दिया गया | अपनी परिषदों के निर्णय को रद्द करने का अधिकार सभी गवर्नर जनरलों को दे दिया गया |

1813 का चार्टर एक्ट

- कम्पनी का भारतीय व्यापार पर एकाधिकार समाप्त कर दिया गया,परन्तु चीन के साथ व्यापार व चाय के व्यापार का एकाधिकार कम्पनी के पास सुरक्षित |

1833 का चार्टर एक्ट

- इस चीन के साथ व्यापारिक एकाधिकार समाप्त कर दिया गया तथा बंगाल के गवर्नर जनरल को भारत का गवर्नर जनरल बना दिया गया |
- 1853 का चार्टर एक्ट
- इस यह व्यवस्था की गयी कि नियंत्रण बोर्ड , सचिव तथा अन्य अधिकारियों का वेतन सरकार निश्चित करेगी, परन्तु वेतन कम्पनी उपलब्ध करायगी | इस अधिनियम की सबसे बड़ी कमी यह थी की भारतीयों को अपने विषय में कानून बनाने की अनुमति नही दी गयी थी |

1858 का अधिनियम

- द्वैध शासन व्यवस्था , इसके लागू होने से समाप्त हो गयी तथा देशी राजाओ का क्राउन से प्रत्यक्ष संबंध स्थापित हो गया | भारत का गवर्नर जनरल अब भारत कावायसराय कहा जाने लगा |
- 1861 का भारतीय परिषद अधिनियम
- यह पहला ऐसा अधिनियम था जिसमें विभागीय प्रणाली एवं मंत्रीमंडलीय प्रणाली की नींव रखी गई | इस अधिनियम द्वारा विधान परिषद के अधिकार अत्यंत सीमित हो गये | विधान परिषद का कार्य केवल कानून बनाना था , गवर्नर जनरल को संकट कालीन अवस्था में विधान परिषद की अनुमति के बिना ही अध्यादेश जारी करने की आजादी थी |

1892 का भारतीय परिषद अधिनियम

- इस अधिनियम द्वारा जहाँ एक ओर संसदीय प्रणाली का रास्ता खुला और भारतीय को काउंसिलोंमें अधिक स्थान मिला, वहीं दूसरी ओर चुनाव पद्धति व गैर सदस्यों की संख्या में वृद्धि ने असंतोष उत्पन्न कर दिया | इसके तहत वांर्षिक बजट पर वांद-विवांद व इससे सम्बन्धित प्रश्न पूछे जा सकते थे परन्तु मत विभाजन का अधिकार नहीं दिया गया था |
- 1909 काभारतीय परिषद अधिनियम
- इस अधिनियम को मार्ले - मिन्टों सुधार के नाम से जाना जाता है | विधान परिषद के अधिकारों में वृद्धि, इससे सार्वजनिक हितो से सम्बन्धित प्रस्तावों पर बहस करने तथा पूरक प्रश्न का अधिकार मिल गया व मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन की व्यवस्था |
- 1919 मांटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार
- सांप्रदायिक निर्वाचन का दायरा बढ़ाकर व्यक्तिगत हित तक सिमित कर दिया गया | प्रान्तों में द्वैध शासन लागू किया , प्रांतीय विषयों को दो भागोंमें विभाजित किया गया |
- आरक्षित (2) हस्तांतरित

भारत सरकार अधिनियम , 1935

- केन्द्र में द्वैध शासन की व्यवस्था की गई | इस अधिनियम में एक अखिल भारतीय संघ की व्यवस्था की गई | प्रान्तोंमें द्वैध शासन समाप्त कर प्रांतीय स्वायत्ता की व्यवस्था की गयी | बर्मा को भारत से अलग किया गया | इण्डियन काउंसिल को खत्म कर दिया गया | तथा RBI की स्थापना की गयी |
- भारत में सामजिक व धार्मिक सुधार अधिनियम

ब्रह्मसमाज

- इसकी स्थापना राजा राम मोहन राय ने 1829 ई. में की थी | इसका उद्देश्य तत्कालीन हिन्दू समाज में व्याप्त बुराइयों जैसे सती प्रथा , बहु विवांह, वेश्या गमन, जातिवांद और अस्पृश्यता आदि को समाप्त करना था | राजा राम मोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का मसीहा कहा जाता है |
- राजा राम मोहन राय की कुछ प्रमुख कृतियों में"प्रिसेप्ट्स ऑफ़ जीसस" प्रमुख है | तथा उन्होंने 'संवांद कोमुदी' का भी सम्पादन किया | इन्होंने 1815 में आत्मीय सभा की स्थापना की तथा 1925 में वेदान्त कॉलेज की स्थापना की |
- उन्होंने सती प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन चलाया तथा पाश्चात्य शिक्षा के प्रति अपना समर्थन जताया |
- राजा राम मोहन राय का अंतिम शब्द 'ॐ' था | ये राष्ट्र - वांद के भी जंक माने जाते है | इनकी मृत्यु के बाद ब्रह्म समाज की देख-रेख की जिम्मेदारी देवेन्द्र नाथ टैगोर के जिम्मे आयी | इन्होंने केशव चन्द्र सेन को ब्रह्म समाज का आचार्य नियुक्त किया | सेन हिन्दू धर्म को सकीर्ण मानते थे | 1865 ई. में व देवेन्द्र नाथ ने इससे आचार्यत्व छीन ली | फिर ब्रह्म समाज का विभाजन ही गया |

भारतीय ब्रह्म समाज (सेन)

आदि ब्रह्म समाज (देवेन्द्र)

- केशव चन्द्र के प्रयास से 1872 का ब्रह्म विवांह कानून पारित हुआ | इन्होंने अपनी पुत्री का विवाह कुच विहार के 16 वर्षीय राजकुमार से कर दिया | जबकि इन्हीं कर प्रयासों से ब्रह्म विवाह कानून पारित हुआ था | फिर आदि ब्रह्म समाज का विभाजन हो गया |

भारतीय ब्रह्म समाज

साधारण ब्रह्म समाज

- 1831 ई. में राजा राममोहन राय , अकबर द्वितीयका पक्ष रखने के लिए ब्रिटेन गये और वहीं पर इनकी मृत्यु हो गई | अकबर द्वितीय के द्वारा उन्हें राजा की उपाधि दी गई |

रामकृष्ण मिशन

- स्थापना 1896-97 ई. में दो स्थान पर एक बेदुर (कलकत्ता) में तथा दूसरा अल्मोड़ा (उतराखंड) में | इसके मुख्य प्रेरक रामकृष्ण प्रम हंस थे | रामकृष्ण की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार का श्रेय उनके योग्य शिष्य स्वामी विवेकानंद (नरेंद्र नाथ दत्त) को जाता है |
- 1893 ई.में विवेकानंद ने शिकागो में हुई धर्म संसद में भाग लेकर पाश्चात्य जगत को भारतीय संस्कृति व दर्शन से अवगत कराया |

आर्य समाज

- स्थापना दयानंद सरस्वती के द्वारा 1875 ई. में बम्बई में की गई | इसका प्रमुख उद्देश्य वैदिक धर्म को पुन: शुद्ध रूप से स्थपित करने का प्रयास | भारत में धार्मिक , सामाजिक व राजनीतक रूप से एक सूत्र में बाँधने का प्रयत्न करना तथा पाश्चात्य प्रभाव को समाप्त करना था |
- इनको बचपन में 'मूलशंकर' के नाम से जाना जाता था | उनके गुरु स्वामी विरजानंद थे | इन्होंने मूर्तिपूजा, बहुदेव वांद, अवतारवांद इत्यादि की आलोचना की तथा वेदों की ओर लौटों क नारा दिया |इनके विचारों का संकलन 'सत्यार्थ

प्रकाश' में मिलता है तथा इन्होने 'सत्यार्थ प्रकाश' को हिंदी में लिखा | इन्होने शुद्धी आंदोलन भी चलाया |

यंग बंगाल आंदोलन

- भारत में यंग बंगाल प्रांरभ करने का श्रेय हेनरी विवियन डेरोजियों को है । डेरोजियों कलकता में'हिन्दु' का कालेज के अध्यापक थे इन्होंने आत्मा विस्तार एवं समाज सुधार हेतु एक 'डामिन एसोसिएशन' एवं 'सोसाइटी फॉर द एग्जीविशन आँफ जनरल नॉलेज' की स्थापना की ।
- डेरोजियो ने 'ईस्ट इण्डिया' नामक दैनिक पत्र का सम्पादन भी किया । डेराजियो को आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि माना जाता है

थियोसोफिकल सोसाइटी

- इसकी स्थापना 1875 ई. में मैडम ब्लावांत्सकी एवं कर्नल अल्कॉट द्वारा न्यूयॉर्क में की गई 1882 ई. में वे भारत आये तथा मद्रास में अडयार के निकट मुख्यालय स्थापित किया । भारत में इस आंदोलन की गतिविधियो को व्यापाक रूप से फैलाने का श्रेय श्री मती एनी बेंसेंट को दिया जाता है । 1898 ई. में उन्होंने बनारस में कॉलेज की स्थापना की जो आगे चलकर 1916 ई. में'BHU' बन गया । आयर लैण्ड की होमरूल की तर्ज पर बेंसेंट ने भारत में होमरुल लीग की स्थापना की ।

बहावी आंदोलन

- भारत में इसे प्रचारित करने का श्रेय सैयद अहमद बरेलवी तथा इस्लाम हांजी मौलवीं मोहम्मद की है सर्वप्रथम इस आंदोलन ने ही मुस्लमानो पर पड़ने वांले पाशचात्य प्रभावों का विरोध किया । अपनेप्रारंभिक दिनोंमें यह आंदोलन पंजाब में सिख सरकार के विरुध्द चलाया गया । इस आंदोलन का मुख्य केन्द्र पटना में था

प्रार्थना समाज

- आचार्य केशव चन्द्र सेन प्ररेणा से रानाडे,आत्मा राम पाण्डुरंग, आदि के द्वारा 1867 ई. में बम्बई में प्रार्थना समाज की स्थापना की गई ।
- इसका उद्देश्य जाति प्रथा का विरोध, स्त्री पुरुष का विवांह की आयु मेंवृद्धि तथा विधवा विवाह व स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन देना था
- **अलीगढ़आंदोलन**
- सर सैयद अहमद खाँ द्वारा चलाया गया । 1877 ई. में अली गढ़में'आंग्ल मुस्लिम स्कूल' की स्थापना की । 1920 ई. तक यही केन्द्र अलीगढ मुस्लिम विश्वविघालय बन गया ।

HARYANA JOB ALERT
हर सवाल का जवाब!

Empowering Youth
Empowering Nation
HARYANA JOB ALERT
हर सवाल का जवाब!